राज एक्सप्रेस, भोपाल 28 OCT 2010

सफल होगी वनवासी सम्मान यात्रा

मध्यप्रदेश में भारत की सर्वाधिक आदिवासी आबादी रहती है। यहां की करीब एक चौथाई जनसंख्या आदिवासी है। उनके विकास के बगैर प्रदेश के विकास की बात बेमानी है। प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अब तक अपनी विकास यात्राओं को अलग-अलग आयामों से कभी खेत-खलिहानों में किसानों से जोड़ा, तो कभी गांव-चौपालों में ग्रामीण जनता से। इस बार उनकी विकास यात्रा 28 अक्टूबर 2010 से इस एक चौथाई आदिवासी आबादी से जुड़कर वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में फिर आगे गतिमान होगी। वनवासी सम्मान यात्रा का शुभारंभ खंडवा यानी पूर्वी निमाड़ की उस भूमि से होगा, जहां प्रसिद्ध क्रांतिकारी टंट्या भील का जन्म हुआ था। मुख्यमंत्री की इस यात्रा की शुरुआत खंडवा जिले की पंधाना तहसील के खालवा विकासखंड के ग्राम बड़दा से होगी। यात्रा का प्रथम चरण क्रांतिकारी टंट्या भील को समर्पित है।

टंट्या एक ऐसे जननायक हैं, जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति व संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। एक ऐसे जननायक, जिन्हें अंग्रेज सरकार 'इंडियन रॉबिन हुड' कहती थी। द न्यूयार्क टाइम्स के 10 नवंबर 1889 के अंक में टंट्या की गिरफ्तारी की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी। इसमें उनको इंडिया का रॉबिन हुड बताया गया था। टंट्या भील का जन्म पूर्वी निमाड़ जिले की पंधाना तहसील के बड़दा गांव में हुआ था। टंट्या समाजवादी सपने साकार करने के लिए अंग्रेजों का खजाना लूटकर गरीबों में बांट देते थे। छापामार युद्ध कौशल, अचूक निशानेबाज, भीलों की पारंपरिक धनुर्विद्या में निपुण, जेल के सीखचों को तोड़कर भाग जाने में समर्थ टंट्या का जीवन जंगलों में अंग्रेज़ों की शक्तिशाली सेना से लोहा लेते हुए बीता। अंग्रेजों ने जनविद्रोह के डर से इस जननायक को कब और कहां फांसी की सजा दी, इसे गुप्त रखा था। मान्यता है कि फांसी के बाद उनके शव को इंदौर-खंडवा रेलमार्ग पर स्थित पातालपानी स्टेशन के पास फेंक दिया गया था।

सरोकार

वहां आज भी एक समाधि बनी है, जिस पर लोगों की आस्था टंट्या की समाधि के रूप में ही है। लोक मान्यता है कि अगर कोई ट्रेन वहां नहीं रुकती है, तो वह कुछ दूर जाकर स्वमेव रुक जाती है। इसीलिए आज भी सभी रेल चालक पातालपानी पर टंट्या को सलामी देने के लिए कुछ क्षण के लिए रेलों को रोकते हैं। उन्हीं जननायक को प्रणाम करती वनवासी सम्मान यात्रा की रेल उनके जन्म स्थल से चलेगी, जो अपने प्रथम चरण में चार जिलों खंडवा, बुरहानपुर, खरगौन और बड़वानी में अपने पड़ाव डालेगी। वहां मुख्यमंत्री इन जिलों के आदिवासी बहुल गांवों में रात्रि विश्राम करेंगे। हिंदुस्तान के नक्शे में विंध्य और सतपुड़ा के बीच बसा भू-भाग निमाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। निमाड़ व्यवस्था की दृष्टि से दो भागों में बंटा है। एक, पूर्वी निमाड़ (खंडवा) व दूसरा, पश्चिमी निमाड़ (खरगौन)। धरती के निम्नांचल में बसा होने से इसका नाम निमाड़ है। नीम के पेड़ों की अधिकता भी निमाड़ कहे जाने का कारण है।

इसी निमाड़ से मुख्यमंत्री प्रदेश के आदिवासी अंचलों के सर्वांगीण विकास का बिगुल बजाने जा रहे हैं। इस उद्घोष से निकलेगी, प्रदेश के विकास में आदिवासियों की सक्रिय सहभागिता, वन अधिकार अधिनियम का प्रभावी क्रियान्वयन, शिकायतों-समस्याओं का त्वरित निराकरण और अनुसूचित जनजातियों को शासन की योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किए जाने के प्रयास की स्वर लहरी। मुख्यमंत्री चाहते हैं कि जनजातियों के हितलाभ से प्रत्यक्षतः जुड़ी गतिविधियों, जैसे-पात्र हितग्राहियों के वन अधिकारों को मान्यता, मनरेगा की मजदूरी का समय पर भुगतान, सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन, छात्रावास और आश्रम शालाओं की व्यवस्था, विद्यालयों और अस्पतालों की सुव्यवस्था, पात्र हितग्राहियों को कपिल धारा के कुएं एवं मोटरपंप आदि की स्वीकृति, इंदिरा आवास योजना का लाभ प्रदान करना, पुलिस एवं आबकारी विभाग से संबंधित शिकायतों का निवारण, छात्रवृत्ति और शिष्यवृत्ति, सामाजिक सुरक्षा योजना आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के संबंध में प्राप्त आवेदनों का निराकरण विशेष रूप से किया जाए। यह यात्रा अपने उद्देश्य में सफल रहे, यही मंगल कामना है।

■ डॉ. स्वाति तिवारी